

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 10 अध्याय 42 — यज्ञ-धनुष का भंग

5 October 2026



एक कुबड़ी दासी प्रभु के एक स्पर्श से सीधी हो जाती है, राजा का यज्ञ-धनुष उनके हाथों में ईख की तरह टूट जाता है, और उस गर्जना से आकाश भर उठने पर कंस रात-भर जागता हुआ अपनी ही मृत्यु के दूतों को देखता रहता है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की हमारी भक्तिमयी यात्रा। दशम स्कन्ध का यह बयालीसवाँ अध्याय मथुरा के राजमार्ग पर कृष्ण के साथ आगे बढ़ता है — दासी त्रिवक्रा पर उनकी कृपा से लेकर कंस के धनुष के टूटने, राजा की भयभीत रात और उसके मल्ल-उत्सव के प्रभात तक।

अध्याय-परिचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 10 (दशम स्कन्ध, पूर्वार्ध)
- अध्याय: 42 (द्विचत्वारिंश अध्याय)

- अध्याय शीर्षक: यज्ञ-धनुष का भंग
- मुख्य वक्ता: श्री शुकदेव गोस्वामी (राजा परीक्षित को सुनाते हुए)
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: मथुरा का राजमार्ग और यज्ञशाला; नगर के बाहर गोपों के छकड़े; कंस का महल; प्रभात में मल्ल-रंगभूमि
- केंद्रीय विषय: त्रिवक्रा पर कृष्ण की कृपा, कंस के यज्ञ-धनुष का भंग, कंस के अपशकुन और निद्राहीन रात, तथा मल्ल-रंगभूमि की सजावट
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 10, अध्याय 42, श्लोक 1-38
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, दशम स्कन्ध)

पूर्व अध्याय का संदर्भ

अध्याय 41 में कृष्ण और बलराम गोपों के साथ मथुरा में प्रविष्ट हुए। कंस का एक घमण्डी धोबी, जिसने उन्हें वस्त्र देने से मना किया, प्रभु की अँगुलियों से मारा गया; एक प्रेमी दर्जी ने दोनों भाइयों को सजाया और वरदान पाया; और माली सुदामा ने उनकी पूजा की, केवल अचल भक्ति, भक्तों की मित्रता और सब प्राणियों पर करुणा माँगी, और हर वर पाया।

राजमार्ग पर कुबड़ी दासी

शुकदेवजी ने कथा आगे बढ़ाई। राजमार्ग पर चलते हुए कृष्ण ने एक सुन्दर मुखवाली कुबड़ी युवती को देखा जो अंगराग से भरा पात्र लिए जा रही थी। मुस्कराते हुए उन्होंने पूछा कि वह कौन है और यह लेप किसके लिए है, और उनसे आग्रह किया कि वह उत्तम अंगराग उन दोनों को दे — इस छोटी-सी सेवा से शीघ्र ही उसका परम कल्याण होगा।

उसने उत्तर दिया कि वह त्रिवक्रा नामक दासी है, जिसे कंस अंगराग बनाने की कला के कारण आदर देता है; उसका बनाया लेप भोजराज को अत्यन्त प्रिय है — किन्तु इन दोनों के सिवा उसका अधिकारी और कौन हो सकता है? दोनों भाइयों के रूप, सुकुमारता, माधुर्य, हास्य, वाणी और चितवन से हृदय हरा जाने पर उसने उन्हें गाढ़ा सुगन्धित अंगराग दे दिया। अपने-अपने वर्ण से भिन्न रंग के उस लेप से, जो उनके ऊपरी अंगों की शोभा बढ़ा रहा था, कृष्ण और बलराम अत्यन्त मनोहर दिखाई दिए।



राजमार्ग पर कंस के लिए अंगराग ले जाती कुबड़ी दासी त्रिवक्रा, दोनों भाइयों के रूप और मधुर वचनों से हृदय हरा जाने पर, अपना उत्तम लेप कृष्ण और बलराम को दे देती है।

दर्शन का फल

उस पर प्रसन्न होकर प्रभु ने निश्चय किया कि गर्दन, छाती और कमर — तीन स्थानों से टेढ़ी इस सुमुखी स्त्री को सीधा कर दें, और इस प्रकार संसार को अपने दर्शन का तत्काल फल दिखाएँ।

प्रसन्नो भगवान् कुब्जां त्रिवक्रां रुचिराननाम् ।

ऋज्वीं कर्तुं मनश्चक्रे दर्शयन् दर्शने फलम् ॥ ६ ॥

prasanno bhagavān kubjāṁ trivakrāṁ rucirānanām ṛjvīm kartuṁ manaś cakre darśayan darśane phalam

अर्थ: प्रसन्न होकर भगवान् ने सुन्दर मुखवाली कुबड़ी त्रिवक्रा को सीधा करने का मन बनाया, और इस प्रकार अपने दर्शन का फल प्रत्यक्ष दिखाया। (स्कन्ध 10, अध्याय 42, श्लोक 6)

अपने चरणों से उसके पंजों के अग्रभाग को दबाकर और खुली हथेली की ऊपर उठी दो अँगुलियों से उसकी ठोड़ी थामकर अच्युत ने उसके शरीर को ऊपर उठाकर सीधा कर दिया। मुक्तिदाता मुकुन्द के स्पर्श से वह उसी क्षण अत्यन्त सुन्दरी बन गई, जिसके सभी अंग सीधे और सुगठित थे।

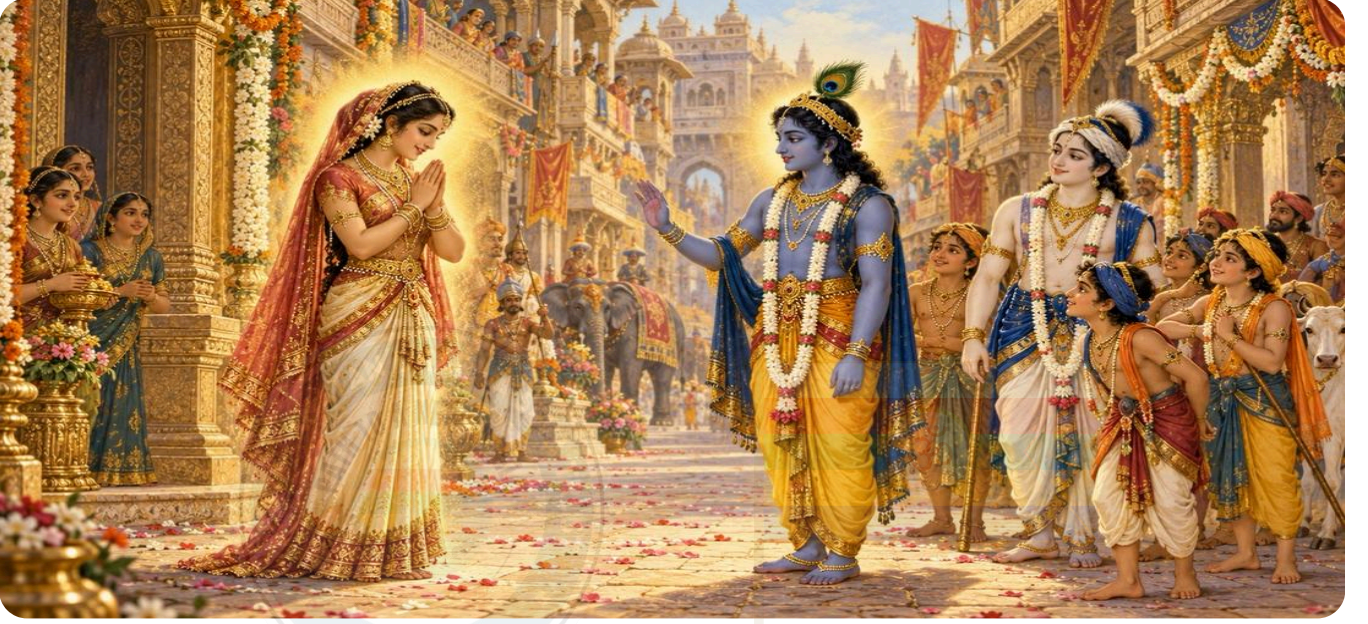
पद्भ्यामाक्रम्य प्रपदे द्व्यङ्गुल्युत्तानपाणिना ।

प्रगृह्य चिबुकेऽध्यात्ममुदनीनमदच्युतः ॥ ७ ॥

padbhyām ākramya prapade dvyaṅguly-uttāna-pāṇinā pragṛhya cibuke 'dhyātmam udanīnamad acyutaḥ

अर्थ: अपने पैरों से उसके पंजों को दबाकर और ऊपर उठी हथेली की दो अँगुलियों से उसकी ठोड़ी पकड़कर अच्युत ने उसका शरीर ऊपर उठाकर सीधा कर दिया। (स्कन्ध 10, अध्याय 42, श्लोक 7)

यहीं इस अध्याय की शिक्षा का हृदय है। प्रभु ने त्रिवक्रा को केवल एक दासी पर दया करके सीधा नहीं किया; उन्होंने यह दिखाने के लिए किया कि उनका दर्शन क्या कर सकता है। तीन जगह से झुका शरीर एक स्पर्श से सीधा हो जाता है — और शास्त्र का संकेत है कि अभिमान, काम और भय से झुकी आत्मा भी उसी क्षण सीधी हो जाती है जब वह सचमुच उन्हें देख लेती है। कंस की ही दासी ने, जो राजा का लेप ले जा रही थी, उसे प्रभु को अर्पित कर दिया और बदले में ऐसी पूर्णता पाई जो कोई राजा नहीं दे सकता। हमारे हाथ में जो कुछ हो, उसके साथ अर्पित की गई भक्ति कभी ठुकराई नहीं जाती, और उसका फल प्रभु का रूपान्तरकारी स्पर्श ही है।



संसार को अपने दर्शन का तत्काल फल दिखाने के लिए कृष्ण एक स्पर्श से त्रिवक्रा के झुके शरीर को ऊपर उठाते हैं, और वह दोनों भाइयों के सामने सीधी, पूर्ण और तेजस्वी खड़ी हो जाती है।

उसकी प्रार्थना और प्रभु का वचन

अब रूप, गुण और उदारता से सम्पन्न त्रिवक्रा ने, जिसके हृदय में प्रभु के प्रति प्रेम जाग उठा था, उनके उत्तरीय का छोर पकड़कर मुस्कुराते हुए उन्हें अपने घर चलने को कहा — वह उन्हें वहाँ छोड़ नहीं सकती, और उस पुरुषश्रेष्ठ से विनती की कि जिसका मन उन्होंने हर लिया है, उस पर वे प्रसन्न हों। बलराम के देखते हुए इस प्रकार प्रार्थना किए जाने पर कृष्ण ने अपने भाई के मुख की ओर और गोपों की ओर देखा, हँसे, और उसे वचन दिया।

एष्यामि ते गृहं सुभ्रु पुंसामाधिविकर्शनम् ।

साधितार्थोऽगृहाणां नः पान्थानां त्वं परायणम् ॥ १२ ॥

eṣyāmi te gṛhaṁ su-bhru puṁsām ādhi-vikarśanam sādhitārtho 'gṛhāṇāṁ naḥ pānthānām tvam parāyaṇam

अर्थ: “हे सुभ्रु, अपना कार्य पूरा करके मैं तुम्हारे घर आऊँगा, जो पुरुषों की मानसिक व्यथा हर लेता है; क्योंकि हम-जैसे घरहीन पथिकों की तुम ही परम शरण हो।” (स्कन्ध 10, अध्याय 42, श्लोक 12)

मथुरा की गलियों में

मथुरा वचनों से उसे विदा कर कृष्ण अपने बड़े भाई के साथ आगे बढ़े, और मार्ग के व्यापारियों ने अनेक भेंटों, ताम्बूल, मालाओं और चन्दन से उनका सम्मान किया। उनके दर्शन से हृदय विचलित हो जाने पर नगर की स्त्रियाँ अपनी सुध-बुध भूल गईं: अस्त-व्यस्त वस्त्र, खिसकते कंगन और खुली चोटियों के साथ वे चित्र में बनी आकृतियों की तरह स्तब्ध खड़ी रह गईं।

यज्ञ-धनुष का भंग

नगरवासियों से पूछते हुए कि यज्ञ के लिए धनुष कहाँ रखा है, अच्युत यज्ञशाला में प्रविष्ट हुए और वहाँ इन्द्रधनुष-सा अद्भुत धनुष देखा — अनेक पुरुषों से रक्षित, विधिवत पूजित और विपुल सम्पदा से घिरा हुआ। रक्षकों के रोकने पर भी कृष्ण ने उसे बलपूर्वक उठा लिया। बाएँ हाथ से खेल-खेल में उठाकर उन्होंने उस पर डोरी चढ़ाई, उनकी आँखों के सामने उसे पूरा खींचा, और पलक झपकते ही बीच से दो टुकड़े कर दिया — जैसे मदमत्त हाथी ईख का डण्डा तोड़ देता है।

करेण वामेन सलीलमुद्धृतं सज्यं च कृत्वा निमिषेण पश्यताम् ।
नृणां विकृष्य प्रबभञ्ज मध्यतो यथेक्षुदण्डं मदकुर्युरुक्रमः ॥ १७ ॥

kareṇa vāmena sa-līlam uddhṛtaṁ sajyaṁ ca kṛtvā nimīṣeṇa paśyatām nṛṇāṁ vikṛṣya prababhañja madhyato yathekṣu-daṇḍaṁ mada-kary urukramaḥ

अर्थ: बाएँ हाथ से लीलापूर्वक उठाए धनुष पर क्षण-भर में प्रत्यंचा चढ़ाकर, लोगों के देखते-देखते उरुक्रम ने उसे खींचकर बीच से तोड़ डाला, जैसे मदमत्त हाथी ईख तोड़ देता है। (स्कन्ध 10, अध्याय 42, श्लोक 17)

उस टूटने की गर्जना से आकाश, पृथ्वी, अन्तरिक्ष और सभी दिशाएँ भर गईं; और उसे सुनकर कंस के हृदय में आतंक समा गया।

धनुषो भज्यमानस्य शब्दः खं रोदसी दिशः ।
पूरयामास यं श्रुत्वा कंसस्त्रासमुपागमत् ॥ १८ ॥

dhanuṣo bhajyamānasya śabdaḥ khaṁ rodasī diśaḥ pūrayām āsa yaṁ śrutvā kaṁsas trāsam upāgamat

अर्थ: टूटते धनुष के शब्द ने आकाश, पृथ्वी और सब दिशाओं को भर दिया; उसे सुनकर कंस भय से काँप उठा। (स्कन्ध 10, अध्याय 42, श्लोक 18)

धनुष के रक्षक क्रोध में भरकर, उन्हें पकड़ने के इरादे से, अपने अनुचरों सहित धनुष ताने प्रभु को घेरकर चिल्लाए, “पकड़ो! बाँधो!” उनकी दुर्भावना देखकर बलराम और कृष्ण क्रुद्ध हुए, टूटे धनुष के दोनों टुकड़े उठा लिए और उन सबको मार गिराया। कंस ने जो सेना उनके पीछे भेजी, उसकी भी वही गति हुई। फिर दोनों भाई यज्ञशाला के द्वार से बाहर निकले और नगर की समृद्धि देखते हुए प्रसन्नता से घूमते रहे; और नगरवासी ऐसा पराक्रम, तेज, निर्भीकता और रूप देखकर उन्हें दो श्रेष्ठ देवता समझने लगे।

नगर के बाहर सन्ध्या

इस प्रकार स्वच्छन्द विचरते हुए सूर्य अस्त हो गया, और गोपों से घिरे कृष्ण और बलराम नगर के बाहर छकड़ों के पास लौट आए। यहाँ एक कोमल सत्य पूरा हुआ। जब ब्रज से प्रभु के प्रस्थान पर विरह-व्याकुल गोपियों ने उन लोगों के लिए आशीष कहे थे जो मथुरा में उनके दर्शन करेंगे — उस नगर के जिन लोगों ने अब उनके रूप की शोभा देखी, उनके लिए वे आशीष अक्षरशः सत्य हो गए।

गोप्यो मुकुन्दविगमे विरहातुरा या आशासताशिष ऋता मधुपुर्यभूवन् ।

सम्पश्यतां पुरुषभूषणगात्रलक्ष्मीं हित्वेतरान् नु भजतश्चकमेऽयनं श्रीः ॥ २४ ॥

gopyo mukunda-vigame virahāturā yā āśāsataśiṣa ṛtā madhu-pury abhūvan sampasyatām puruṣa-bhūṣaṇa-gātra-lakṣmīm hitvetarān nu bhajataś cakame 'yanam śrīḥ

अर्थ: मुकुन्द के जाने पर विरह-पीड़ित गोपियों ने जो आशीष कहे थे, वे मथुरा में उन लोगों के लिए सत्य हो गए जिन्होंने पुरुषभूषण के अंगों की उस शोभा को देखा — जिसे स्वयं श्री, अपने अन्य सब उपासकों को छोड़कर, अपना निवास बनाना चाहती हैं। (स्कन्ध 10, अध्याय 42, श्लोक 24)

पैर धोकर दोनों भाइयों ने दूध में पकी मीठी खीर खाई, और कंस अगले दिन क्या करना चाहता है यह जानते हुए भी वह रात सुखपूर्वक बिताई।

कंस की निद्राहीन रात

कंस के लिए ऐसी कोई शान्ति नहीं थी। धनुष के टूटने, उसके रक्षकों और अपनी सेना के मारे जाने की बात सुनकर — जो गोविन्द और बलराम के लिए बालकों का खेल-मात्र था — दुर्बुद्धि राजा देर तक जागता रहा, और स्वप्न में तथा जागते हुए, दोनों अवस्थाओं में, उसने मृत्यु के दूत-रूप अनेक अपशकुन देखे। दर्पण में उसे अपना प्रतिबिम्ब दिखा पर उस पर सिर नहीं था; सामने कुछ न होने पर भी आकाश की ज्योतियाँ उसे दोहरी दिखीं; अपनी छाया में उसे छेद दिखाई दिए, और कान बन्द करने पर भीतर की प्राण-ध्वनि सुनाई न दी। वृक्ष उसे सोने के लगे, और अपने पैरों के चिह्न उसे नहीं मिले। स्वप्न में उसे प्रेतों ने गले लगाया, वह गधे पर चढ़ा, उसने विष पिया, और तेल लगाए, लाल फूलों की माला पहने और केवल दिशाओं को वस्त्र बनाए वह अकेला भटकता रहा। सोते-जागते ऐसे दृश्य देखकर और मृत्यु से आतंकित कंस चिन्ता के मारे पलक भी न झपका सका।



धनुष टूटने और रक्षकों के मारे जाने की बात सुनकर कंस रात-भर जागता रहता है, और दर्पण, छाया और स्वप्न में अपनी मृत्यु की सूचना देने वाले अपशकुन देखता है।

मल्ल-रंगभूमि

रात बीतने पर जब सूर्य जल से ऊपर उठा, तब कंस ने अपना महान् मल्ल-क्रीड़ा-उत्सव आरम्भ कराया। उसके सेवकों ने रंगभूमि को बुहारा, जल छिड़का और फूलों तथा मालाओं से सजाया; तुरही और नगाड़े बजे, और दर्शक-मंच मालाओं, पताकाओं, पर्दों और तोरणों से सजाए गए। उन पर नगर और जनपद के लोग, ब्राह्मण और क्षत्रिय आगे रहकर, अपनी रुचि से बैठे, और राजा अपने-अपने आसनों पर विराजे।

कंसः परिवृतोऽमात्यै राजमञ्च उपाविशत् ।

मण्डलेश्वरमध्यस्थो हृदयेन विदूयता ॥ ३५ ॥

kaṁsaḥ parivṛto 'mātyai rāja-mañca upāviśat maṇḍaleśvara-madhya-stho hṛdayena vidūyatā

अर्थ: मन्त्रियों से घिरा कंस माण्डलिक राजाओं के बीच राजमंच पर बैठा, और उसका हृदय व्यथा से काँप रहा था। (स्कन्ध 10, अध्याय 42, श्लोक 35)

मल्लों के ताल ठोंकने के साथ तुरहियाँ बजने लगीं, और सुसज्जित अभिमानी पहलवान अपने गुरुओं सहित प्रवेश कर अपने स्थानों पर बैठे; चाणूर, मुष्टिक, कूट, शल और तोशल, मधुर वाद्य से हर्षित होकर, अखाड़े में आगे आए। और भोजराज द्वारा विशेष रूप से बुलाए गए नन्द आदि गोप, अपनी भेंटें अर्पित कर, एक अलग मंच पर एक साथ बैठ गए।



सूर्योदय पर रंगभूमि बुहारी, मालाओं से सजाई और पताकाओं से ढकी जाती है; कंस काँपते हृदय से राजमंच पर बैठता है, चाणूर और मुष्टिक प्रवेश करते हैं, और नन्द तथा गोप अपने अलग मंच पर बैठते हैं।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. उनका दर्शन स्वयं फल देता है। प्रभु त्रिवक्रा को इसीलिए सीधा करते हैं कि यह प्रकट हो कि उनका दर्शन क्या करता है। दर्शन केवल एक झलक नहीं; वह देखने वाले को तन और आत्मा, दोनों में नया रूप देता है।
2. जो हम संसार के लिए ढोते हैं, वह उन्हें अर्पित हो सकता है। त्रिवक्रा का लेप कंस के लिए था, फिर भी उसने वह दोनों भाइयों को सहर्ष दे दिया और असीम फल पाया। हमारी जो भी कला या वस्तु हो, वह प्रभु के हाथों में जाते ही पवित्र हो जाती है।
3. प्रभु विनम्र के प्रेम का आदर करते हैं। एक साधारण दासी को वे उसके घर आने का वचन देते हैं और उसे पथिकों की शरण कहते हैं। संसार की दृष्टि में कितना ही छोटा भक्त हो, वे उसकी उपेक्षा नहीं करते।
4. अभिमान के साधन उनके हाथों में टूट जाते हैं। कंस का पूजित, बहुतों से रक्षित धनुष एक हाथ से उठाकर ईख-सा तोड़ दिया जाता है। दुष्टों की शक्ति, कितनी ही सजी हो, प्रभु की इच्छा के आगे खिलौना है।
5. दोषी हृदय विश्राम नहीं पाता। कंस की अपशकुनों से भरी रात और मंच पर उसका काँपना दिखाते हैं कि भगवान से बैर का अविभाज्य साथी भय है, जबकि दोनों भाई उसकी योजनाएँ जानते हुए भी शान्ति से सोते हैं।

एक भक्तिमय चिन्तन

इस अध्याय में दो रातें साथ-साथ रखी गई हैं, और उनका अन्तर ही इसका मौन उपदेश है। नगर के बाहर, खीर का सादा भोजन करके, कृष्ण और बलराम सन्तुष्ट विश्राम करते हैं, यद्यपि वे ठीक-ठीक जानते हैं कि कंस ने सुबह के लिए क्या तैयार किया है। महल के भीतर राजा अपनी आँखें बन्द नहीं कर पाता, और हर दर्पण, छाया और तारा उसके अन्त का सन्देशवाहक बन गया है। परिस्थिति किसी भी रात का निर्णय नहीं करती; प्रभु से हृदय का सम्बन्ध दोनों का निर्णय करता है। और इन दोनों के बीच खड़ी है त्रिवक्रा — मार्ग की वह झुकी हुई दासी, जिसके पास

अर्पित करने को एक लेप-पात्र के सिवा कुछ न था, और उसने वही दे दिया। उनसे अपने को रोक रखो, तो संसार स्वयं मृत्यु की फुसफुसाहट करने लगता है; अपना थोड़ा-सा उन्हें दे दो, तो एक स्पर्श से हम सीधे खड़े कर दिए जाते हैं, उनके आगमन का वचन पाते हैं, और शान्ति में छोड़ दिए जाते हैं।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज कोई एक चीज़ जो आप सामान्यतः अपने लिए या संसार के लिए रखते हैं — कोई कला, थोड़ा समय, कोई सुगन्धित वस्तु — उसे सचेत होकर प्रभु को अर्पित करें, जैसे त्रिवक्रा ने अपना चन्दन अर्पित किया। ऐसा करते हुए प्रार्थना करें कि आपके भीतर जो कुछ झुका हुआ है, वह उनके दर्शन से सीधा हो जाए। आरम्भ में धीरे-धीरे जपें: ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

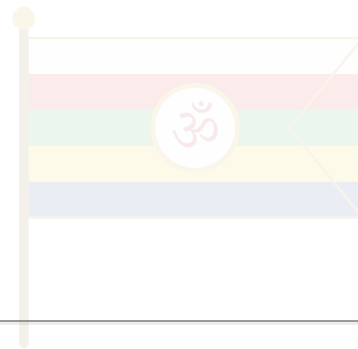
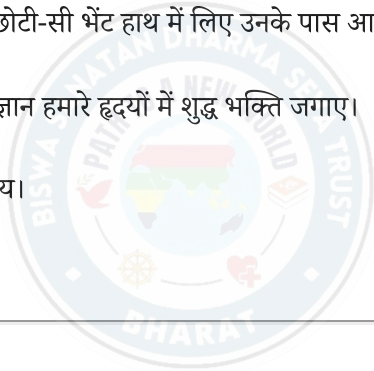
उपसंहार

दशम स्कन्ध का अध्याय 42 कृपा से पराक्रम और फिर आतंक की ओर बढ़ता है: त्रिवक्रा पर प्रभु का करुण स्पर्श, यज्ञशाला में कंस के धनुष का टूटना, राजा की अपशकुनों से भरी निद्राहीन रात, और प्रभात में पहलवानों, राजाओं और व्रज के गोपों से भरती रंगभूमि। इन सबके बीच एक सत्य चमकता है — प्रभु का दर्शन भक्त को सीधा करता है और दुष्ट को भयभीत, और दोनों ही उनकी ओर खिंचे चले आते हैं। हम भी त्रिवक्रा की तरह अपनी छोटी-सी भेंट हाथ में लिए उनके पास आएँ।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।



संदर्भ एवं आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी), दशम स्कन्ध (पूर्वार्ध), द्विचत्वारिंश अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़्डम • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण सहित दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में प्रस्तुत हैं। यह किसी एक प्रकाशक के सतत अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक के संबंध या समर्थन का दावा नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-10-chapter-42-the-breaking-of-the-sacrificial-bow-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञानम् • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

